लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest

लेखा संगम

17-18वां संयुक्तांक

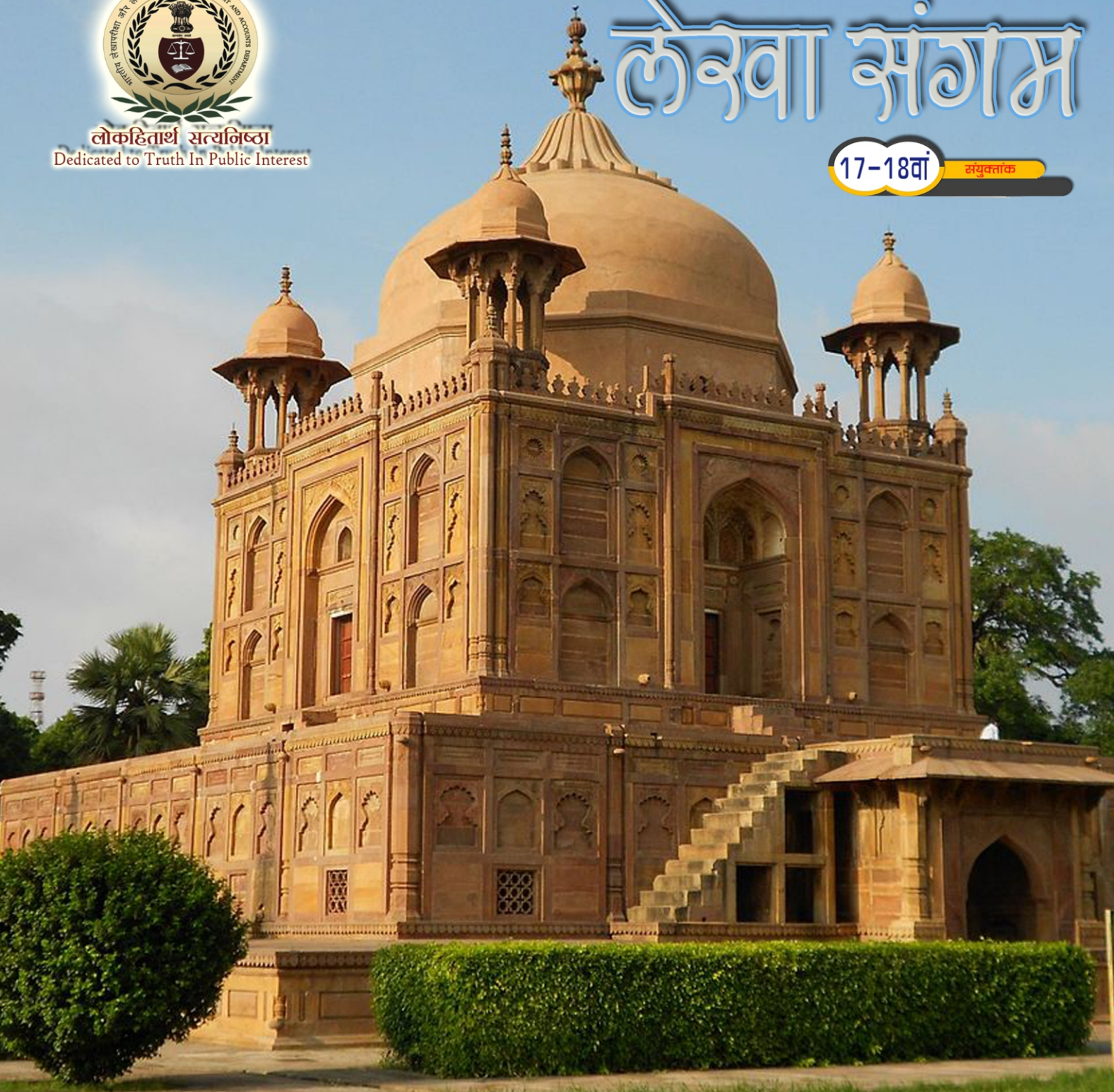

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

'लेखा संगम' के 16वें अंक का विमोचन

हिंदी पखवाड़ा 2021

केवल विभागीय वितरण हेतु

17–18वां संयुक्तांक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth In Public Interest

हिंदी पत्रिका

लेखा संगम

जनवरी 2021 से दिसंबर 2021

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

श्री राम हित
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री आर. के. सोलंकी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

परामर्शदाता

श्री राजेंद्र कुमार खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय

संपादक

श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सह–संपादक

सुश्री साधना राय
हिंदी अधिकारी

श्री प्रत्यूष अवस्थी
सहायक लेखाधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री शिप्रा सिंह
हिंदी अधिकारी

श्री अमीन अली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

तकनीकी संपादक

श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग

सुश्री प्रज्ञा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मूल्य : निःशुल्क (राजभाषा हिंदी को समर्पित)
मुख पृष्ठ : खुसरो बाग
कुल पृष्ठ : 52

(नोट : लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)

अनुक्रमणिका

गद्य

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम (श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
01	बारिश का इंतजार	श्री यश मालवीय	11
02	मूल मंत्र	श्री लोकेश चंद्र लाल	15
03	लॉकडाउन (संस्मरण)	श्री शशांक त्रिवेदी	18
04	स्वार्थ और परमार्थ	श्री रमेश चन्द्र	21
05	पारिवारिक मूल्य एवं स्वस्थ जीवन	श्री सतीश राय	24
06	जब मैं पॉजिटिव हुआ	श्री विकास जायसवाल	26
07	ठक, ठक, ठक	श्री राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव	28
08	साध्वी	सुश्री पुष्पा मिश्रा	30
09	शिक्षा में सुधारः सभी बच्चों का अधिकार	सुश्री आकृति कुशवाहा	32

पद्य

10	आज सुबह का गीत	श्री यश मालवीय	35
11	कोरोना के कहर से काँप रहा संसार	श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	36
12	अंतिमपथ	श्री चंचल कुमार तिवारी	38
13	माँ का घर	सुश्री ममता श्रीवास्तव	42
14	कविताएँ	श्री नीरज भाटिया	43
15	ढाई आखर का हाहाकार	सुश्री पापिया हालदार	44
16	मौन	श्री शिवम कुमार	45
17	कान्हा! फिर से आना होगा	श्री अंकित निगम	46
18	देवकी और यशोदा	सुश्री प्रीति श्रीवास्तव	48
19	धन्य है पावन सुरसरिता	श्री अनुराग निषाद	49
20	साइकिल	श्री रवींद्र कुमार शर्मा	50

संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में प्रकाशित हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 17-18वें संयुक्तांक को आप सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के कार्मिकों के साहित्यिक एवं रचनात्मकता के भाव को परिलक्षित करने का मंच प्रदान करके उनकी अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

यह पत्रिका अपनी सृजनात्मक क्षमता के कारण राजभाषा के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित हो रही है। इस पत्रिका के लेख, कविताएँ, कहानियाँ एवं अन्य रुचिकर सामग्री जहाँ एक ओर कार्यालय के सहकर्मियों की साहित्यिक रुचि को उजागर करती है, वहीं दूसरी ओर उनके राष्ट्र प्रेम एवं राजभाषा के प्रति समर्पण भाव को भी परिलक्षित करती है। उनका यही सामूहिक प्रयास राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

'लेखा संगम' के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु सभी लेखक एवं संपादक मण्डल बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी 'लेखा संगम' पत्रिका का हर नवीन अंक इसी तरह रचनात्मकता के नये आयाम स्थापित करता रहेगा।

'संगम' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विकास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(राम हित)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 17–18वें अंक के प्रकाशन पर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हिंदी न केवल संपर्क की भाषा है बल्कि यह आपसी प्रेम, सौहार्द एवं मेलजोल की भाषा है। राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा की भावना को मजबूत करना और सरल, सरस एवं सुबोध हिंदी को बढ़ावा देना ही पत्रिका का मूल ध्येय है और इस ध्येय को पूर्ण करने के प्रयास में "लेखा संगम" निश्चित रूप से अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है।

"लेखा संगम" में प्रकाशनार्थ रचनाएँ प्रेषित करने वाले रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं। यह हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा को प्रदर्शित करता है। पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन पर मैं संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ। आशा है कि भविष्य में "लेखा संगम" आपके प्रयासों से यूँ ही पुष्पित एवं पल्लवित होती रहेगी। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(आर. के. सोलंकी)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों....

"लेखा संगम" पत्रिका का 17–18वां संयुक्तांक आपको प्रस्तुत करते हुये बहुत प्रसन्नता हो रही है। अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राजभाषा हिंदी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। राजभाषा हिंदी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करने के प्रयासक्रम में ही पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष है। आशा करता हूँ कि प्रस्तुत अंक आप सभी पाठकों को पसंद आएगा और हिंदी के प्रचार-प्रसार का पत्रिका का मुख्य उद्देश्य प्राप्त हो सकेगा।

हिंदी भाषा कई भाषाओं और बोलियों का संगम है जो इसे सौहार्द की भाषा बनाता है। हिंदी अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित कर लेती है और अपने इसी गुण के कारण हिंदी को सहज एवं सरल भाषा कहा जाता है। राजभाषा हिंदी भारत में ही नहीं अपितु विश्व में तेजी से विकसित होने वाली भाषा है। यूनिकोड के कारण अब इंटरनेट के प्रयोग में भी हिंदी का प्रचलन बढ़ा है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को देखते हुये विदेशों में भी हिंदी का प्रचलन बढ़ा है तो हमें अपनी ही इस समृद्धशाली भाषा के प्रयोग में संकोच क्यों हो। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिये हमें संकल्प लेना होगा कि हम केवल औपचारिकता के लिये हिंदी का प्रयोग न करें अपितु हिंदी को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनायें और अपनी बोलचाल की भाषा में हिंदी के शब्दों का अधिकाधिक उपयोग करें। कार्यालय के सभी कार्य हिंदी में करें।

पत्रिका के आगामी अंको को अधिक सफल बनाने हेतु पाठकों के बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी। कार्यालयी कार्यों से इतर समय निकालकर "लेखा-संगम" के लिये रचनायें लिखकर प्रेषित करने वाले सभी रचनाकारों और पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बहुमूल्य सुझाव एवं सहयोग प्रदान करने हेतु प्रत्येक व्यक्ति को बहुत-बहुत धन्यवाद।

(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
संपादक

(99)

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज –211001
REGIONAL TRAINING INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

TRI. Dr. C/

पत्रांक : क्षे.प्र.सं.(प्र)/विविध (हिन्दी पत्रिका पावती)/फा.–132/194
दिनांक: 27/06/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषय :कार्यालयीन की राजभाषा पत्रिका ''लेखा संगम'' के सोलहवें अंक का प्रेषण ।

संदर्भ :आपका पत्र सं. हि.अ./लेखा संगम/सोलहवाँ अंक/2022/18480, दिनांक 31.05.2022

महोदय,

उपरोक्त संदर्भित विषयान्तर्गत लेखें है कि आपके कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका ''लेखा संगम'' का सोलहवाँ अंक इस संस्थान को प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। उक्त पत्रिका में सहभागी संपादक मंडल को इस संस्थान परिवार की तरफ से धन्यवाद। साथ ही अत्यंत हर्ष की बात है कि आपके कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किए जाने से राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहे, ऐसी क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागराज परिवार की तरफ से शुभकामनाएं है।

यह पत्र महानिदेशक महोदय के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

डायरी नं- 23619
दिनांक- 22/06/22

भवदीय,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

(98)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA 700 001
Ph: (033) 2211 3151/52, Fax: (033) 2213 3174
e-mail: agauwestbengal@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/64
दिनांक: 16.06.2022

सेवा मे

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषय : कार्यालयीन राजभाषा ई-पत्रिका "लेखा संगम" के 16वें अंक की पावती।

महोदय

पत्र क्रमांक:हि.अ./लेखा संगम/सोलहवाँ अंक/2022/18480 दिनांक:31.05.2022 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी ई-पत्रिका "लेखा संगम" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है। विशेष रूप से श्री सगीर अहमद सिद्दीकी जी द्वारा लिखा गया गजल बहुत सुंदर है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

16/6/22
वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

डायरी नं- 22740
दि/8- 21/06/2022

SP
EG 5505002/0 EN

दूरभाष Telephone- 2223251, 2225766, 2224812

फैक्स/ Fax 0612-2225977
Tele Gram ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) का कार्यालय,बिहार पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

Sr AO/ Hindi cell

पत्रांक हि.अ./ले. व ह./05/प.प्र./2022-23/ 342
दिनांक 20/6/2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तरप्रदेश,प्रयागराज-211017

विषय :– **हिन्दी पत्रिका 'लेखा संगम' के 16 वां अंक का प्रेषण के संबंध में।**

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 06.06.2022 के द्वारा हिन्दी पत्रिका लेखा संगम के 16 वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है।पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका का बाहरी रंग-रूप हीं नहीं,आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं।सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभायगी ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
17/06/2022
हिन्दी अधिकारी
हिन्दी कक्ष

डायरी संख्या 21694
दिनांक 21/6/22

SP/EG 3876874024EN

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/30
दिनांक: 13-06-2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी /हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज - 211 001

Hindi(cell)

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "लेखा-संगम" के 16 वें अंक के प्रतिभाव के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **"लेखा-संगम"** के 16 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा की रचना "अधिवक्ता की बुद्धि", श्री अंकित निगम की रचना "लघु-कथा 'पिन', श्री ओम प्रकाश मौर्या की रचना "एक अनोखा इंसान", श्री लक्ष्मण प्रसाद की रचना "छठ महापर्व", श्री शंकर लाल की रचना "एक रुपए की कीमत", श्री भूपेन्द्र सिंह नेगी की रचना "जीवन का उद्देश्य", श्री अशोक कुमार की रचना "परिवर्तन", श्री अनुराग निषाद की रचना "मेरी भाषा हिंदी", श्री सगीर अहमद सिद्दीकी की रचना "गजल", और श्री चंचल कुमार की रचना "माँ" आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर हमारे महापर्व कुंभ का चित्र हमारी संस्कृति की याद दिलाता है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर ग्रामीण दृश्य का चित्र भी सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाता है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

डाक
23619
23.6.22

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Principal Accountant General (A & E), West Bengal

संख्या / No. प्रधा. हिंदी सेल/पत्रिका/2022-23/41

दिनांक / Dated : 22/06/2022

सेवा में,

व. लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश
20, सरोजिनी नायडू मार्ग
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद - 211 001

विषय: कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 16वें अंक की पावती एवं अभिमत ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका **"लेखा संगम"** के 16वें अंक की ई-प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई । एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। पत्रिका का अंक पठनीय एवं उत्कृष्ट है। विशेषकर डॉ नमिता चंद्रा की **"चुनौतियों का सामना करती आज की महिला"**, श्री शशांक विवेदी की **"पगलिया"**, श्री शंकर लाल की **"एक रुपये की कीमत"** एवं श्री चन्दन कुमार तिवारी की **"माँ"** आदि रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय हैं ।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

डायरी क्र॰ - 23617
दिनांक - 22/06/22

भवदीय,

(चन्दन कुमार बढ़ई)
हिन्दी अधिकारी/प्रशा. हिंदी सेल
एवं सम्पादक "वन्दे मातरम्"

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, २, गवर्नमेंट प्लेस, वेस्ट, कोलकाता-७०० ००१
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone : (033) 2213 8000, Fax : (033) 2248-7849
e-mail : agaewestbengal@cag.gov.in Web Site : http://agwb.cag.gov.in

94

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल–462011
कमांक /हिंदी कक्ष /फा.07 /जावक–09

दिनांक-14.06.2022

प्रति,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) प्रथम
उत्तर प्रदेश ,प्रयागराज

विषय: कार्यालयीन राजभाषा हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 16 वें अंक के ई–संस्करण की पावती बाबत।

संदर्भ: आपका पत्र संख्या: दिनांक: 06.06.2022

महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कार्यालयीन राजभाषा हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 16वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर अधिवक्ता की बुद्धि, सफ़र, एक अनोखा इंसान, छठ महापर्व, लड़कियाँ और पुरानी सोच, जीवन का उद्देश्य, सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

14/6/22

डा.सं. 20842
दिनांक-15.06.22

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

SP
AE 972454885IN

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

पत्र संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/18
दिनांक: 08/06/2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज- 211001

0 8 JUN 2022

संदर्भः- हि.अ./लेखा संगम/सोलहवाँ अंक/2022/18480 दिनांक 31/05/2022

विषयः हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 16वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 16वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभारा पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री लक्ष्मण प्रसाद, वरिष्ठ लेखाकार का लेख "छठ महापर्व", श्री शंकर लाल, वरिष्ठ लेखाकार का लेख "एक रुपये की कीमत" तथा डॉ. नमिता चन्द्रा, सहायक लेखाधिकारी का लेख "चुनौतियों का सामना करती आज की महिला" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

डाक अनुभाग
डाक संख्या...2227 8.....
17.6.22

भवदीय

(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in

SP
EK 815393455 IN

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.

सं.हि.प्रशा.-2022-23/51 **दिनांक-** 09.06.2022

सेवा में,

वरि. लेखाधिकारी / हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका 'लेखा संगम' के 16 वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से सुश्री. आकृति कुशवाहा का लेख "लड़कियाँ और पुरानी सोच" श्री भूपेन्द्र सिंह नेगी का लेख "जीवन का उद्देश्य" श्री अजय वर्मा का लेख "प्रकृति देवो भव" एवं श्री चंचल कुमार तिवारी का लेख "माँ" आदि ज्ञानवर्धक हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

डाक अनुभाग
डाक संख्या...2227 9.....
17.6.22

File No./

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23/ दिनांक- 17.06.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-1 का कार्यालय,
20, एस.एन. मार्ग ,
प्रयागराज,- 211001 (उत्तरप्रदेश)
ईमेल- sadhanar.erly@cag.gov.in

विषय- राजभाषा पत्रिका **"लेखा संगम"** के **16वें** अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका **"लेखा संगम"** के **16वाँ** अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ , एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री अंकित निगम	लघु कथा - पिन
2.	श्री लक्ष्मण प्रसाद	छठ महापर्व
3.	श्री सगीर अहमद सिद्दीकी	गज़ल
4.	श्री चंचल कुमार तिवारी	माँ

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष स -0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

SP
EV-845972277 IN

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

पत्रांक:26 / हि0प्र0 / 2022–23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 566 दिनांक 16.06.2022

Sr AO/Hindicell

सेवा में
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज – 211001

विषय:–हिन्दी ई–पत्रिका "लेखा संगम" के 16 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई–पत्रिका "लेखा संगम" का 16 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

16/6/22
हिन्दी अधिकारी

डाक की संख्या...24870
दिनांक ... 27.6.22

"महालेखाकार भवन",कौलागढ़, देहरादून–248195 "Mahalekhakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun: 248195
दूरभाष / Telephone: 2970866, 2970867; फैक्स / Fax: 2970859
Website: agua.cag.gov.in Email: agaeuttarakhand@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई -18

सं. प्रमले.(लेप.-II)/हि.अ./प्रशंसा पत्र /7-38/2022-23/ दिनांक: 10.06.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम & द्वतीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
विषय : हिंदी ई-पत्रिका " लेखा संगम " के सोलहवे अंक की पावति ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका " लेखा संगम " की सोलहवे अंक (जुलाई 2020 से दिसंबर 2020) की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में संकलित सभी लेख और रचनाएँ सरल, विचार प्रेरक एवं पठनीय हैं। श्री अंकित निगम की "पिन ", सुश्री आकृति कुशवाह की "लड़कियाँ और पुरानी सोच", श्री भूपेंद्र नेगी की "जीवन के उद्देश्य ", श्री शंकर लाल की "एक रुपये की कीमत " तथा श्री अनुराग निषाद की " मेरी भाषा हिंदी " के साथ साथ अन्य संकलन एवं कविताएँ भी रोचक तथा ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ शिक्षाप्रद और राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु उपयोगी हैं। पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

वी. चित्रा
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,

File No..../..-1//-11011/-196/2018-22

93

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

क.-राभा/अ/ले.प.-I/एच-11011/के-196/प्रतिक्रिया/2018-22 दिनांक- 08/06/2022

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
20, सरोजिनी नायडू मार्ग,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज-211001

विषय- राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 16वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'लेखा संगम' के 16वें अंक की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं आकर्षक हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्च कोटि का है। पत्रिका मे सहभागिता से कार्मिकों की सृजनात्मक सोच में वृद्धि के साथ ही राजभाषा के प्रचार और प्रसार को बल मिलता है। बाल कलाकारों का योगदान विशेष रुप से प्रसंशनीय है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका 'लेखा संगम' इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

भवदीय,

अरुण कुमार शर्मा
Welfare Officer
राजभाषा अनुभाग

लेखा संगम

गद्य संगम

बारिश का इंतज़ार

श्री यश मालवीय
पर्यवेक्षक

आसमान पर बादल का एक टुकड़ा भी दिख जाता है तो मन हुलस उठता है पर अगले ही क्षण में उदास हो जाता है। कहीं से भटककर आ गया बादल अचानक ही कड़ी धूप की गिरफ़्त में आकर झुलसकर राख हो जाता है, और फिर शुरू हो जाता है बारिश का उदास इंतज़ार। यह इंतज़ार समाज के हर तबके को होता है, उसे भी जो बैंकों से लोन लेकर, उनकी मँहगी किस्तें भरता हुआ ज़िंदगी की गाड़ी खींच रहा होता है और उसे भी जो खाया–अघाया वातानुकूलित कक्षों में बैठा डकारें भर रहा होता है।

समूचा उत्तर भारत चालीस–पैंतालीस से लेकर पचास तक के तापमान में झुलस रहा है। धरती एक बहुत बड़े विशाल गर्म तवे जैसी हो गई है, मुश्किल से दो–चार बूँदें पड़ती भी हैं तो छन्न हो जाती हैं, और फिर सिलसिला शुरू हो जाता है नातमाम और अटूट गर्मी का। शरीर ही नहीं झुलसता, हमारी इच्छाएँ और उम्मीदें भी जल–झुलसकर तार–तार हो जाती हैं। समय के साथ बारिश के इंतज़ार का परिप्रेक्ष्य भी बदला है। बारिश का इंतज़ार अब केवल किसानों को ही नहीं वीर जवानों को भी होता है। सबके अपने–अपने इंतज़ार हैं। सबके इंतज़ार के अपने रंग हैं। सब आकर अपनी–अपनी खिड़कियों पर खड़े होते हैं और आसमान की ओर कातर भाव से निहारते हैं। पानी तो बरसता नहीं, हाँ! हमारी उम्मीदों पर पानी अवश्य पड़ जाता है। आदमी की ही तरह बादल भी उछलते हैं। रोज़–ब–रोज़ बारिश की भविष्यवाणियाँ गलत हो जाती हैं। हर दिन आता है, कुछ और सूख जाता है हमारे भीतर। हरापन शीशे–सा दरक जाता है। अच्छे मौसम का इंतज़ार, अच्छे दिनों के इंतज़ार की तरह ही दिवास्वप्न साबित होता।

बमुश्किल थोड़ी–सी छींटाकशी होती भी है तो बस मन टीसकर रह जाता है। कई बार तो सड़कें भी पूरी तरह से नहीं भीगतीं, बस मन ही सीलकर रह जाता है या फिर जैसे थाना क्षेत्र बाँटकर कर्फ्यू लगा करता है, उसी तरह पानी भी बरसता है। कनॉट प्लेस में पानी बरसता है, दरियागंज का कथित दरिया सूखा रह जाता है। करोलबाग में मूसलाधार होता है और कमलानगर में रिमझिम भी नहीं होती। बारिश में भी बारिश नहीं होती, एक अंतहीन जेठ ही तपता रहता है। पावसगीत अंतरात्मा में ही शुष्क होते

रहते हैं। इंतज़ार टूटता नहीं, हम ही टूट जाते हैं। थोड़ा सा रूमानी होना भी नसीब नहीं होता। बारिश के लिये यज्ञ–हवन, पूजा–अनुष्ठान होते हैं, फिर भी बादल ज़्यादातर अपनी बेईमानी से बाज नहीं आते। खेतों में निर्वसनाओं के हल जोतने का टोटका भी होता है, पर कुछ काम नहीं आता। 'बरसो राम पके धनिया...' का मंत्र भी बेअसर हो जाता है।

बड़ी मान–मनौती के बाद हमारा इंतज़ार फलीभूत भी होता है, तो घंटे–दो–घंटे की बरसात में ही चारों तरफ़ कीचड़–कांदों देखकर हम उकता से जाते हैं। हमारा बारिश का सारा रूमान ही हवा हो जाता है। हमें अच्छा मौसम ही ख़राब लगने लगता है और लगे भी क्यों ना। हमारी छतें चूने लग जाती हैं। जनाब असलम इलाहाबादी याद आते हैं–

''छत तोड़ के आ जाता है बरसात का पानी
हम पक्के मकानों में भी महफ़ूज़ नहीं हैं''

ज़रा सी बारिश में ही 'मैला आँचल' बिखर जाता है, 'गोदान' सील जाता है। पांडुलिपियाँ पन्ना–पन्ना हो जाती हैं। जो आदमी अभी तक बारिश के इंतज़ार में पलकें बिछाए बैठा था, दुआएँ माँग रहा था, प्रार्थनाएँ कर रहा था, वही धूप को टेरने लगता है। मौसम बदलने की आस देखने लगता है।
ये आदमी है ही अजीब चीज। कैलाश गौतम के शब्दों में कहता है–

''बरसात बुरी नहीं है
मगर अफ़सोस पानी बताशे पर पड़ रहा है''

हमारे दिलों का बताशा भी बहुत जल्दी ही घुलने लगता है। हम स्वभाव से ही बहुत अस्थिर चित्त लोग होते हैं। हमें जो हो रहा होता है, उससे हम बहुत शीघ्र ऊब जाते हैं। हमें वह चाहिए होता है, जो नहीं हो रहा होता है। मानव स्वभाव ही विचित्र है। पानी बरसा नहीं कि अमरनाथ श्रीवास्तव कह उठते हैं–

''मयख़ाने के ऊपर है सूरज की नज़र टेढ़ी,
आँगन पे कुम्हारों के बादल है तो बादल है''

बहरहाल! चाहे जो भी हो, अभी तो बारिश का इंतज़ार थका रहा है। मेरी नन्हीं पोती का स्कूल खुल गया है, उसे एक अदद रेनी डे का इंतज़ार है। छाते धूल खा रहे हैं, रेनकोटों की तहें नहीं खुली हैं। 'कागज की कश्ती, बारिश का पानी' सपना हो गया है। प्रश्न ही प्रश्न हैं, सारे उत्तर–भारत से उत्तर ही नदारद हैं। कह सकते हैं कि हमारा उत्तर प्रदेश ही प्रश्न प्रदेश हो गया है। आइए हम सब बारिश के अपने–अपने उदास इन्तज़ारों को पोसें। क्या पता कौन सी बारिश हमारे हर तरह के अवसाद का मुँह

धुला ही जाए।

हमारा बारिश का इंतज़ार भी ग्लोबल वार्मिंग के जबड़ों में फँसकर रह गया है। बारिश भी विसंगतियों की शिकार है। असमय और बेमौसम तो होती ही है, जब झमाझम बारिश होनी चाहिए, तब हम अकाल में सारस देखकर ही संतोष कर लेते हैं। जलवायु परिवर्तन ने हमारा बेड़ा ही गर्क कर रखा है। हमारे देश में मानसून के बादल ही जल का एक बड़ा स्रोत रहे हैं। हिन्द महासागर से उठने वाले बादल भला किस पहाड़ से टकराकर बरसें, जब पहाड़ ही जमींदोज किये जा रहे हैं। नंगे हो रहे हैं पहाड़, जंगल कट रहे हैं। शहर कथित विकास की भेंट चढ़ रहे हैं। विकास की आड़ में विनाशलीला चल रही है। हम अपने शहर इलाहाबाद की ही बात करें, तो उत्तर भारत के लगभग हर शहर में सिविल लाइंस है, पर संगमनगरी के सिविल लाइंस की बात ही और रही है, यह धर्मवीर भारती की अमर कृति 'गुनाहों का देवता' में भी छाया हुआ है, पर आज सिविल लाइंस जाकर देखें, वहाँ कंक्रीट का जंगल उग आया है। भारी तादाद में सड़कों के चौड़ीकरण के चक्कर में पेड़ काट डाले गए हैं। भरी दुपहरी में भी, जहाँ सघन पेड़ों का छायावाद रहता था, वहाँ दिन उगने के साथ ही तेज़ धूप का साम्राज्य फैल जाता है, सुबह नहीं होती सीधे दोपहर हो जाती है, वहाँ पानी बरसे भी तो कैसे? अब सिविल लाइंस वैसा तो नहीं रहा, बस हरी–भरी यादें ही रह गई हैं और रह गया है बारिश का इंतज़ार।

जल संरक्षण की कहानियाँ पढ़ते ही जीवन बीत रहा है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र की याद आती है, जिन्होंने 'आज भी खरे हैं तालाब' जैसी कृति हिंदी को दी। आज तो दरअस्ल तालाब रह ही नहीं गए हैं, रह गए हैं तो बस तालाब के नाम पर बड़े–बड़े गड्ढे, ना यकीन हो तो हमारे शहर के 'गुड़िया तालाब' आकर देख लीजिए। तालाब ही नहीं आँख का पानी भी मर गया है ।

कोविड–19 ने एक बार फिर यह पूरी तरह से सुनिश्चित कर दिया है कि मनुष्य अब कितना बेचारा और निरीह हो चला है, जिसका वह खुद ही जिम्मेदार है। लगातार प्रकृति का दोहन उसको किस कदर मँहगा पड़ा है, यह बताने की जरुरत नहीं है। पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक में 180 देशों में भारत सबसे निचले पायदान यानी 180वें नम्बर पर है। सम्पूर्ण पर्यावरण ही धू–धू जल रहा है, ऐसे में बारिश और बादलों का रूठना भला कौन रोक सकता है जब तक कि हम चेतें नहीं। हम बारिश के इंतज़ार को भी इसी तरह से अभिशप्त रहेंगे। हम बेचैन रूह की तरह पंख फड़फड़ाते रहेंगे। या तो बारिश होगी नहीं, या होगी तो इतनी होगी कि बाढ़ का प्रकोप बरपा होगा। या तो सूखा पड़ेगा या बाढ़ आएगी। सहज मौसम ही सपना हो जाएगा। सामान्य जीवन अस्त व्यस्त ही रहेगा। पारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन हमें भी असंतुलित ही करता रहेगा। हम मोहताज़ रहेंगे एक मनमोहक बरसात के, जो हमें खुशियों से भर देती

रही है। जाड़े में भी गर्मी पड़ेगी और बरसात में शादाब बेलें भी सूख जायेंगी। जनाब बशीर बद्र साहब का शेर याद आता है–

''भरी बरसात में शादाब बेलें सूख जाती हैं
हरे पेड़ों के गिरने का कोई मौसम नहीं होता''

अभी बरसात का इंतज़ार हमें बेचैन कर रहा है, फिर अतिवृष्टि हमें तबाह करेगी। हम तुष्ट हो–होकर भी असन्तुष्ट ही रहेंगे। मुकेश साहब का गाना 'बरखा रानी जरा जमके बरसो' भी हमें चिढ़ाएगा ही। हमारे हिस्से आएगा इंतज़ार, इंतज़ार और केवल इंतज़ार। बरसात भी खून के आँसू ही रुलायेगी।

अगर हम नहीं संभले तो हर मौसम हम पर क़हर ढायेगा। हमें विचार की हिंसा से भी बचना होगा। बरसात हमारे दिलों के दाग और खून के धब्बे भी नहीं धो पाई तो फिर क्या मतलब बरसात और बरसात के इंतज़ार का। शायरे आज़म फ़ैज़ अहमद फ़ैज की याद आती है, जनाब फ़रमाते हैं–

''कब नज़र में आएगी बेदाग सब्जे की बहार,
खून के धब्बे धुलेंगे कितनी बरसातों के बाद''

सारे किन्तु परन्तु लेकिन के बाद भी लगता है हमारा इंतज़ार पुरस्कृत होगा ही। बादलों को छाना है, वो छाएंगे ही। हमें उनके स्वागत के लिये तैयार होना है, और यह भी देखना है कि कहीं तेज़ हवा या आँधी उन्हें उड़ा न ले जाय। हमें चालाक इन्द्रदेव की उपासना–आराधना, पूजा–अर्चना करनी है। प्रार्थना कभी अनुत्तरित नहीं जाती, शर्त यह है कि वह पूरे मन–प्राण से की जाए। हमें उन नयनों को भी पूजा के फूल चढ़ाने होंगे, जिनके लिये कहा गया है–

''सावन के बादलों की तरह हैं भरे हुए
ये वो नयन हैं जिनसे कि जंगल हरे हुए''

बारिश का इंतज़ार भी मोहब्बत के इंतज़ार जैसा ही होता है, जिसके लिये किसी शायर ने कहा है–

''तमाम जिस्म को आँखें बना के राह तको,
तमाम खेल मोहब्बत में इंतज़ार का है।''

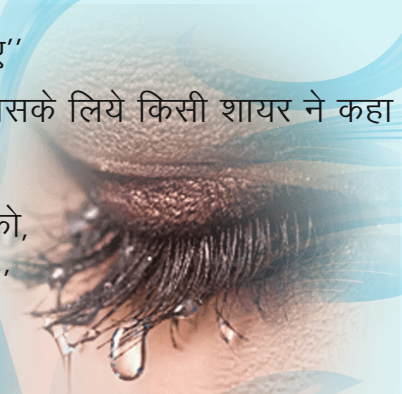

मूल मंत्र

श्री लोकेश चंद्र लाल
कनि. हिंदी अनुवादक

कहते हैं सागर की गहराई में गोते लगाने से मोती हाथ आ ही जाती है। मैंने भी ज्ञान के अथाह सागर में गोता लगाया और शायद मेरी मेहनत ने ही मुझे नौकरी रूपी मोती दिलाई। मेरी नौकरी के ख़बर से पूरे घर में खुशी की लहर दौड़ गई। इस दिन का घर के सभी सदस्यों को इंतज़ार था। माँ के खुशी के आँसू तो रोके न रुक रहे थे। वो चहकती हुई मुहल्ले के सभी औरतों को शुभ समाचार दे रही थी। मेरा मुहल्ला और आस–पास के मुहल्ले तक यह बात आग की तरह फैल चुकी थी। वर्षों बाद हमारे मुहल्ले में किसी की सरकारी नौकरी लगी थी। आस–पड़ोस के लोग कहीं आते–जाते मुझे यूँ निहार रहे थे जैसे कि मैं रोबिन हुड हूँ। अन्य घर के बच्चों को मेरी तरह बनने की नसीहतें दी जा रही थी। मैं बहुत खुश था। ज़िंदगी एक नई करवट ले रही थी। इन खुशियों के बीच मेरे हृदय का एक कोना अशांत था। घर से दूर जाने की बात सोचकर ही डर लग रहा था।

देखते ही देखते वो दिन भी आ गया जब नौकरी ज्वाइन करने के लिए प्लेटफॉर्म पर खड़ा मैं ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहा था। मन में बहुत घबराहट थी। पापा भी साथ जा रहे थे। शायद मेरे मन को पापा ने टोह लिया था पर कुछ बोले नहीं। मन को शांत करने और मन में उठे तंरगों को छुपाने के लिए बार–बार ट्रेन के आने वाली दिशा में झांकने जाता। ट्रेन की आने की घोषणा, लोगों की बातचीत, चाय वाले की पुकार आदि सब कुछ मेरे कानों तक यात्रा कर रही थीं लेकिन मस्तिष्क किसी भी आवाज़ को पहचानने में असमर्थ था। शायद मेरा मन यहाँ होकर भी यहाँ नहीं था। कुछ समय बाद ट्रेन आई, प्रभु का नाम लेकर हम रवाना हो गए।

अगले दिन सुबह होटल में ठहरे, चाय–जलपान कर कार्यालय के लिए हम निकल पड़े। 'भाइना कौंठी जीबे? की ध्वनि से हम रुके। नई जगह, नए चेहरे और नई भाषा। इस बात का अर्थ समझने की हम कोशिश कर रहे थे। अंदाज़ा लगाया कि ऑटो चालक शायद यह पूछ रहा है कि हमें कहाँ जाना है।

उसे समझते और समझाते हम कार्यालय पहुँच गए। कार्यालय में सारी औपचारिकताओं के बाद पूरा दिन अस्थायी रूप से एक कुर्सी पर बैठा रहा। शाम को होटल पहुँचा। मन में एक अलग–सी उलझन थी। कैसे रहूँगा? क्या करूँगा? अपनी बात, कोई जरुरत हो तो किससे कहूँगा? कैसे समझाऊँगा? पापा भी तो जल्दी ही चले जाएंगे। इन बातों में मैं इतना खो गया था कि पापा के दो बार आवाज़ देने पर भी मैं कुछ सुन नहीं पाया था। तब पापा ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए जीवन में आने वाले उतार–चढ़ाव, कठिनाइयों की लहरों को चीरकर आगे बढ़ने का सलीका, अपने अनुभवों के प्रकाश से मेरे मन में घर कर गई भय रूपी अंधकार को मिटाने का प्रयास कर रहे थे।

शुरुआत उन्होंने अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की कविता 'एक बूँद' से की–

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी
सोचने फिर फिर यही मन में लगी
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी
चू पड़ूंगी या कमल के फूल में।

बचपन की इस कविता के शब्द आज एक नया अर्थ, नई परिभाषा और जीवन को एक नई राह प्रदान कर रहे थे। अपने जीवन को सार्थक बनाने हेतु हमें अपने घरौंदे से बाहर निकलना ही पड़ता है। कर्मभूमि में प्रवेश करने के साथ – साथ संघर्ष भी अवश्यंभावी हो जाता है। सोना भी तपने के पश्चात् ही कुंदन की संज्ञा प्राप्त करता है। पापा एक–एक करके मेरे हृदय की गांठ को खोलते जा रहे थे और मैं किसी साधक की भांति शांत मन से सब कुछ ग्रहण किए जा रहा था। अक्सर हम यह सोचते हैं कि हम बहुत ज्ञानी हैं पर किसी न किसी मोड़ पर हमें यह अहसास अवश्य होता है कि हमारे अंदर कितना ज्ञान है। ज्ञान और अनुभव दोनों अलग–अलग दिशाएँ हैं पर दोनों ही मनुष्य के जीवन को पूर्णता प्रदान करती हैं।

पापा ने मुझे तीन मंत्र बताए जिससे जीवन को सुगम बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा, ''पहला मंत्र है– 'विनम्रता'। हम चाहें कितनी भी सफलता की सीढ़ियाँ क्यों न चढ़ लें, हमें विनम्रता का दामन

कभी नहीं छोड़ना चाहिए। कुर्सी की इज्ज़त तो सभी करते हैं, उसे उचित मान–सम्मान भी प्रदान करते हैं लेकिन व्यक्ति को उचित मान–सम्मान तभी मिलता है जब उसके अंदर ज्ञान के साथ–साथ विनम्रता भी होती है। व्यक्ति चाहे कितने भी ऊँचे पद पर आसीन क्यों न हो जाए उसे विनम्र होना चाहिए। हमें कभी भी विनम्रता का त्याग कर घमंड को हावी नहीं होने देना चाहिए वरना उसके विकास का वहीं अंत हो जाएगा। यदि हम अपने–आप को सर्वज्ञानी और सबसे ऊँचा समझने की भूल करेंगे तो अपनों से इतना दूर हो जाएंगे कि लोग अपनी खुशियों और गम में शामिल करने से पहले सोचेंगे अपने मन और ज्ञान–भंडारण रूपी गिलास को हमेशा विनम्रतापूर्वक थोड़ा खाली रखना चाहिए जिसको ज्ञान रूपी पानी से और भरने की गुंजाइश हो। ज्ञान बुरा नहीं होता, ज्ञान किसी से भी प्राप्त हो ले लेना चाहिए।

दूसरा मंत्र है 'इच्छा–शक्ति'– कुछ कर दिखाने, कुछ पाने और कुछ सीखने की। इच्छा–शक्ति का संचार हमेशा होना चाहिए। इच्छा–शक्ति जो हमारे संकल्प को साकार करने का माध्यम बनती है। ऐसी बलवती इच्छा को जिसकी ज्योति अहर्निश कभी मंद न हो, उसे 'दृढ़ इच्छा–शक्ति' कहते हैं, अंग्रेजी में इसे 'बर्निंग डिजायर' कहते है। इच्छा–शक्ति का अंत एक तरह से जीवन की गति को विराम देना होता है। 'अज्ञेय' जी के शब्दों में– 'बहता पानी निर्मला, टिकना तो मौत है।' अतः जीवन की गाड़ी चलती रहनी चाहिए जिसके लिए इच्छा–शक्ति एक अनिवार्य तत्व है।

तीसरा मंत्र है 'आत्मसम्मान' – दूसरों से तभी सम्मान की आशा रखनी चाहिए जब हम ख़ुद का सम्मान करते हो। खुद के सम्मान के लिए पहले बुरी आदतों और बुरे स्थानों से समझौता करना पड़ता है। सही समय पर कार्यालय जाना, नियमों का यथोचित पालन करना, अपनी कुर्सी और अपने कर्तव्यों का सम्मान करना आदि बातों पर ध्यान देना चाहिए। तभी इन बातों का दूसरों से उम्मीद कर पाओगे और वे भी तुम्हें सम्मान देंगे जिसके तुम सही हक़दार होगे।

पापा कहे जा रहे थे और मैं ध्यानमग्न होकर उन बातों को आत्मसात् करता जा रहा था। कहते हैं न– 'गुरु जेही मोहे पंथ दिखावा, बिनु गुरु जगत मैं निर्गुण पावा।' आज पापा ने मुझे ज़िंदगी का वह पाठ पढ़ाया जिससे मैं सर्वथा अनभिज्ञ था। अब तो बहुत कुछ सीखना बाकी है। मैं सोच रहा था नौकरी लग जाने के बाद मेरी शिक्षा, मेरी दौड़ पूर्ण हुई किंतु मैं गलत था। शिक्षा का केवल एक अध्याय मात्र पूर्ण हुआ है, पूरा पाठ्यक्रम तो अभी बाकी है।

लॉकडाउन (संस्मरण)

श्री शशांक त्रिवेदी
लेखाकार

2019 के दिसम्बर में कोरोना नाम की किसी महामारी के फैलने की उड़ती हुई ख़बरें सुनी। इसकी भयावहता के किस्से भी गाहे–बगाहे सुने जा रहे थे। फिर भी मुझे कतई यकीन नहीं था कि मेरे मुल्क में इसका रत्ती भर भी दुष्प्रभाव पड़ेगा। दरअसल बचपन से ही इतनी ख़बरें सुनी कि फलाँ उल्का पिंड रात में पृथ्वी से टकराने वाला है या फिर फलाँ तारीख को दुनिया खत्म होने वाली है, सो अपना भरोसा उठ गया था ऐसी किसी चीज से। लेकिन उम्मीद से इतर, हालात बद से बदतर होते जा रहे थे। प्रयागराज में था उन दिनों। लॉकडाउन, सेनेटाइज़र, क्वारंटाइन जैसे शब्दों से पहली बार बावस्तगी इसी कालखंड में हुई। जनता कर्फ्यू लगा, तमाम लोगों की तरह हमने भी शाम को थाली इत्यादि बजाई और ये वाकई उस मातम वाले माहौल को हल्का करने वाला था। अगले दिन पता चला कि 21 दिन का सम्पूर्ण लॉकडाउन लगा दिया गया है, जो जहाँ है वो वहीं पर रहे। हर नुक्कड़ चौराहे पर पुलिस बैरिकेडिंग लगाए खड़ी थी और बाहर निरर्थक घूमने वाले प्राणियों का यथोचित सत्कार कर रही थी। एक छोटे से कमरे में कोई अधिकतम कितने दिन रह सकता है? मैं और मेरे अजीज मित्र हर्षित ने 2–3 दिन जैसे–तैसे काटे, लेकिन फिर धैर्य जवाब देने लगा। इधर–उधर की अफ़वाहें भी सुनी, जैसे कि फलाँ आदमी कोरोना से नहीं रहा, बहुत दर्दनाक मौत हुई इत्यादि। आप अपनों के साथ रहिए तो बुरी ख़बरें भी आपको अकेले होने के मुक़ाबले ज्यादा आतंकित नहीं करेंगी। अकेले होने पर कोई बुरी ख़बर मिले तो उसका असर दूना होता है।

यूरोपीय देशों में महामारी का प्रकोप फैला हुआ था और दिन–ब–दिन हमारे यहाँ भी मामले बढ़ रहे थे। संयोगवश मेरा एक मित्र अपना ट्रक लेकर प्रयागराज से लगभग 20 किलोमीटर दूर बाईपास से गुज़र रहा था। पता नहीं क्यों उस दिन मैंने उसे फ़ोन कर लिया। वो घर ही जा रहा था सो हमलोगों ने भी उसी के साथ जाने का निश्चय किया। एक भैया नजदीकी पुलिस थाने में तैनात थे, उनसे बात करके ये तस्दीक की कि वे हमलोगों को अपने साथियों के प्रसाद से बचाते हुए सकुशल बाईपास पर छोड़ देंगे जहाँ से हमें ट्रक मिल जाएगा। रात्रि वेला में ड्यूटी होने के कारण वे सुबह जाकर सो गए और मैं उन्हें

फ़ोन करता रह गया। हमने पैदल ही निकलने का निश्चय किया। राह में पुलिस ने दो चेकपॉइंट पर चेक किया चूँकि हमारे पास वैध कारण था और आई. डी. कार्ड भी, सो हमें जाने दिया गया। बमुश्किल डेढ़

किलोमीटर चले होंगे कि एक लखनऊ जाने वाली बस बिल्कुल खाली मिल गई। वो दिल्ली से आए यात्रियों को छोड़कर वापस लखनऊ जा रही थी।

अंधा क्या माँगे ? दो आँखें ! हमने तुरन्त रणनीति में फ़ेरबदल करते हुए बस में बैठने का फ़ैसला किया। परिचालक ने अच्छी तरह से सैनेटाइज़ कराने के बाद सीट पर बैठने दिया। रात करीबन 11 बजे हमलोग चारबाग बस अड्डे पहुँच गए।

बस अड्डे का मंज़र डराने वाला था। लगभग 8–10 हजार लोग थे। बस अड्डा पूरा भरा और आसपास की सड़क पर लोग एक के ऊपर एक खड़े हुए थे। उन्हें नियंत्रित करने के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस के कर्मयोगी लगे हुए थे। चूँकि हमारे जिले के लिए बस कैसरबाग़ बस अड्डे से मिलती थी इसलिए चारबाग़ के पीछे वाली सड़क से रात में पैदल हमने कैसरबाग़ की ओर कूच किया।

महामारी का दौर इसलिए भी भयानक हो जाता है कि कोई उम्मीद नहीं दिखाई पड़ती। जब उम्मीद दिखने लगे तो महामारी का दंश हल्का पड़ जाता है।

दिनभर से कुछ खाना नहीं खाया था सो भूख भी लगने लगी थी। रास्ते में एक जगह पर लोग कढ़ी चावल बाँट रहे थे। हम उसे खाकर आगे बढ़ गए।

पुराने लखनऊ की गलियाँ बड़ी संकरी सी हैं। जगह जगह स्ट्रीट लाइट लगी हुई हैं इसलिए अंधेरे का प्रकोप शहर में दृष्टिगोचर नहीं होता। एक पतली सी गली से एक वृद्ध–जन बाहर निकले। बाएँ हाथ में एक बेंत लिए, सामान्य शर्ट और पतलून पहने। उनकी उम्र करीब 75 साल रही होगी। 'बेटा! सुनो।'

मैं ये संबोधन सुनकर चौंका।

फिर तनिक नज़दीक जाकर उनसे मुख़ातिब हुआ। 'इसमें खाने की कुछ सामग्री है। आपलोग बहुत दूर से आए लग रहे हैं। कुछ राहत मिल जाएगी।'

ये कहते हुए उन्होंने एक पॉलीथिन मेरी तरफ़ बढ़ाई। हम अभी 5 मिनट पहले ही खाकर निकले थे लेकिन उस आग्रह को ठुकराने का बोझ मैं अपने हृदय पर नहीं ले सकता था। मैं अपने हृदय के उद्‌गार किसी को लिखकर बतला सकता हूँ। यदि वही किसी को सामने बताना हो तो मैं निःशब्द हो जाता हूँ। कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए मैं दो शब्द भी उनसे न बोल सका। मैं उनके पैर छूना चाहता था, उनके गले लगना चाहता था। पर सत्यानाश हो अंतर्मुखी स्वभाव का! इतने विशाल हृदय के लोग कितने शेष बचे होंगे ! दुनिया ऐसे ही लोगों से तो खूबसूरत बनती है। मानवता और संवेदनाएं ऐसे ही लोग ज़िंदा रखे हुए हैं। मैंने बहुत विनम्रता से हाथ जोड़कर उनका दिया स्वीकार किया। फिर कुछ देर बाद कैसरबाग़ बस अड्डे के बाहर एक चबूतरे पर मैंने उस पॉलीथिन को खोला। 7–8 कचौड़ियाँ, कुछ सूखी सब्जी, नमक और अचार। इतना सब था उस स्नेह की पोटली में ! मैंने उतना सुस्वादु भोजन अभी तक नहीं किया।

उनकी उम्र उसी समय काफ़ी थी और थोड़ा–सा झुक गए थे पर मुझे उम्मीद है कि ईश्वर ने महामारी के उस मुश्किल दौर में भी उन्हें सुरक्षित और स्वस्थ रखा होगा। तब मैंने महसूस किया कि लखनऊ को तहज़ीब का शहर यूँ ही नहीं कहते।

स्वार्थ और परमार्थ

श्री रमेश चंद्र
सहायक लेखाधिकारी

स्वार्थ शब्द स्व+अर्थ से बना है जिसका अर्थ यह होता है कि अपने हितों के लिए कार्य करना। आजकल हर जगह यह सुना जाता है कि दुनिया स्वार्थी है, समाज स्वार्थी हो गया है। अपने हितों के लिए कार्य करना कोई बुरा कार्य नहीं है, इस भौतिकवादी संसार में अपने लिए कार्य करना प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। इसको दूसरे शब्दों में यह कह सकते है कि दुनिया कॉमर्शियल हो गयी है। अधिकतर व्यक्ति बढ़ती हुयी मंहगाई में घर का खर्च उठाने के लिए कॉमर्शियल हो गये हैं।

स्वार्थी का मोटे तौर पर अभिप्राय यह है कि मतलबी होना, अर्थात अपना कार्य सिद्ध होने के बाद अन्य व्यक्ति से कोई मतलब न रखना। अपनें स्वार्थ के कारण जो अपनें हितों का ध्यान तो रखते है किन्तु अन्य लोगों के हितों की अनदेखी करते है, स्वार्थ पूर्ति में लगे हुए लोग प्रायः दूसरे की निन्दा करते हैं तथा ईर्ष्यालु होते हैं। इस दुनिया में कुछ लोग इतने स्वार्थी होते है कि रिश्तों को आंकना शुरू कर देते हैं कि कौन अधिक फायदेमंद है, कौन कम फायदेमंद है। इन सबका समाज पर इतना कुप्रभाव होता है कि सामाजिक वैमनस्यता बढ़ती है और अपने, अपनो से दूर हो जाते हैं। स्वार्थ के विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है–

"हरो चरहिं तापहि बरत फरे पसारहिं हाथ।
तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ।। "

इसका अर्थ यह है कि जब वृक्ष हरा रहता है तो पशु चर लेते हैं, मनुष्य लकड़ी जलाकर तापते हैं (हाथ सेंकते हैं) यदि वही वृक्ष जब फल देने लगता है तो उसके सामने हाथ फैलाते हैं। अर्थात् मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि फल देने वाले वृक्ष को काटता है तथा उसकी शाखाओं को काटकर जलाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी का कहना है कि सभी मानव स्वार्थी है परमार्थी तो केवल ईश्वर है।

किसी लेखक ने निम्न पंक्तियाँ लिखी है–

"स्वारथ लागि करैं सब प्रीती।
सुर नर मुनि की याही रीती।।"

निम्न पंक्ति में यही बात कही गयी है।

''मतलब की दुनिया सारी
कोई किसी का यार नहीं।''

आज की दुनिया में लोग स्वार्थवश ही बात करते हैं। किसी शायर ने ठीक ही लिखा है–

''ऐसा असर डाला है मतलबी लोगों ने जहाँ पर,
ख़ैरियत भी पूछो तो लोग समझते हैं कि कोई काम होगा।''

आचार्य चाणक्य ने तो यहाँ तक कह दिया कि

''न कोई शत्रु है और न कोई मित्र, केवल स्वार्थ ही शत्रु और मित्र है।''

परमार्थ का अर्थ परोपकार से है। परहित ही श्रेष्ठ माना गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है–

''पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।''

अर्थात दूसरे को पीड़ा पहुँचाने का कार्य अधम कार्य है तथा दूसरे का भला करने, के बराबर कोई धर्म नहीं है। अन्यत्र कहा गया है कि–

वृक्ष कबहुं नहि फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।''

अर्थात सज्जन व्यक्ति केवल परोपकार में ही लगे रहते हैं जिस प्रकार वृक्ष अपने फल नहीं खाते तथा नदियाँ अपना जल नहीं पीती।

परमार्थ में दूसरे का उपकार, अर्थात दूसरे के हितों का ध्यान रखा जाता है। कुछ लोगों द्वारा यह उक्ति भी कही जाती है–

''कर भला तो हो भला''

निःसन्देह कोई किसी का भला करेगा तो उसका प्रतिफल, भले के रूप में पायेगा। परमार्थ करते समय उसका गुणगान (जिक्र) नहीं करना चाहिए तथा ''नेकी कर दरिया में डाल'' इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए। परन्तु इस भौतिकवादी संसार में यह कैसे सम्भव है जब लोग अपनी प्रशंसा सुनने के लिए आतुर रहते हो।

आज ही नहीं, परमार्थ तो सदियों साल पहले धर्म का एक अंग माना गया है।

''अष्टादश पुराणेसु व्यासस्य वचन द्वयम।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्।''

अर्थात् अट्ठारह पुराणों में महर्षि ब्यास के दो वचन ही है (1) सबसे बड़ा पुण्य–परोपकार है (2) तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना पाप है।

परन्तु जिस परमार्थ में दिखावा है वह परमार्थ की श्रेणी में नहीं आता जो स्वार्थ सर्वहित में हो वह परमार्थ से भी अच्छा है।

कभी कभी एक ही कार्य, स्वार्थ और परमार्थ दोनों हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि कोई डॉक्टर, फ़ीस लेकर किसी का इलाज करता है तो यह उसका स्वार्थ है और बिना किसी फ़ीस लिए वह गरीबों का इलाज करता है तो यह परमार्थ है।

परमार्थ अथाह है वह केवल धन–दौलत देने से नहीं होता अपितु बीमार की सहायता, घायल की मदद आदि करके किया जा सकता है–

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या जीवन में केवल परमार्थ ही किया जाय या स्वार्थी बनकर अपने हितों (उद्देश्यों) की पूर्ति की जाय?

इसका उत्तर यही हो सकता है कि न तो हमें केवल स्वार्थी बनकर जीना चाहिए बल्कि कुछ काम ऐसे करने चाहिए जिनसे परमार्थ होता हो क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अपने कार्यो के साथ साथ सामाजिक दायित्वों की पूर्ति करना पड़ता है। किसी कवि की निम्न पंक्तियों से इसका सार स्पष्ट हो जाता है।

"यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।
मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे।"

पारिवारिक मूल्य एवं स्वस्थ जीवन

श्री सतीश राय
वरिष्ठ लेखाकार

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ के लोगों में संस्कारों के साथ एक–दूसरे के प्रति समर्पण की भावना कूट–कूटकर भरी है। यही समर्पण हमें बड़े–बुजुर्गों की सेवा एवं सम्मान करने की शिक्षा देते हैं। तभी तो श्रवण कुमार अपने माता–पिता को बहगी द्वारा कंधे पर लादकर चार–धाम की यात्रा करने चल दिये थे। भगवान श्री राम अपने पिता के वचनों को पूर्ण करने हेतु राजसी ठाट–बाट को छोड़कर जंगलों में चले गये थे।

वर्तमान में भौतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने की होड़ और ज्यादा धन कमाने की लालसा के कारण लोग पश्चिमी सामाजिक शैली को अपना रहे हैं जिससे धन तो खूब कमा रहे हैं लेकिन सुख, शांति, चैन सब खोते जा रहे हैं। इसके कारण लोगों में समर्पण की भावना में कमी आ रही है। संयुक्त परिवार की जगह अब एकल परिवार तेज़ी से बढ़ रहे हैं। इसी राह पर चलते हुए बच्चे अपने माँ–बाप की इज़्जत नहीं कर रहे हैं। वृद्ध होने पर वो उन्हें बोझ समझकर वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं ताकि उनके आराम और दिनचर्या में कोई खलल न दे। मनुष्य प्राकृतिक गुणों को भूलता जा रहा है जबकि जीव–जंतुओं में आज भी अपने साथी या परिवार के प्रति समर्पण और देखभाल की भावना दिखायी पड़ती है। इसी से संबंधित एक सच्ची सुनी घटना मेरी स्मृति में आ रही है जिसे मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

एक व्यक्ति अपने मकान की मरम्मत करा रहा था। उसने देखा कि दिवार के अंदर की तरफ़ लकड़ी के बड़े से होल में एक छिपकली थी जो भाग नहीं पा रही थी, ध्यान से देखने पर पता चला कि उसके पैरों में कील ठुकी थी जिसके कारण एक ही जगह पर जमी पड़ी थी, उसे हटाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह हट नहीं पायी। मन दया–भाव से भर गया। जब ध्यान से देखा तो पाया कि पाँच साल पहले मकान बनाते समय जो कील ठोकी गयी थी, वही कील उसके पैरों में धँसी थी।

छिपकली इस स्थिति में पाँच साल तक जीवित थी। दीवार के अंधेरे में बिना हिले–डुले और बिना खाये कैसे जीवित बची? छिपकली पाँच साल तक क्या करती रही और कैसे भोजन की जरूरत को पूरा करती रही? यही जानने के लिए मकान में मरम्मत का कार्य बंद करवा दिया और इंतज़ार करने लगे।

कुछ देर बीत जाने के बाद पता नहीं कहाँ से एक दूसरी छिपकली अपने मुँह में भोजन दबाये हुए उस फँसी हुई छिपकली को खिलाने के लिए आगे बढ़ती हुई दिखाई दी।

यह अद्भुत दृश्य था। उसने अपने साथी को बचाने की उम्मीद नहीं छोड़ी थी। वह अपने साथी छिपकली को पिछले पाँच साल से भोजन करवा रही थी। यह घटना मेरे हृदय को झकझोर गयी।

पृथ्वी के प्रत्येक जीव–जंतुओं में समर्पण के एक से एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मिलते हैं जबकि हम मनुष्य इनसे सीख न लेते हुए पश्चिमी सामाजिक शैली को अपना रहे हैं। अपने संस्कार, अपनी सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। परिवार, मित्र और समाज से जुड़े हुए व्यक्ति अधिक स्वस्थ और तनावरहित जीवन व्यतीत करते हैं। इनसे अलग होना ही गंभीर बीमारियों को अनायास आमंत्रित करना है। यह मनोविकारों एवं दुश्चिंताओं से प्रारम्भ होकर गंभीर शारीरिक रोगों पर समाप्त होता है।

जब मैं पॉज़िटिव हुआ

श्री विकास जायसवाल
सहायक लेखाधिकारी

जी हाँ, मैं कोरोना की ही चर्चा कर रहा हूँ, जानकारी होने पर मैं जितना हताश था, उससे अधिक उत्साह के साथ आपबीती का वर्णन कर रहा हूँ–

दूर से मेरे कानों में घंटी की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। मुझे लगा कि कोई मेरी कुशलता के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा है.. वह कौन?

नहीं–नहीं, मेरी श्रवण शक्ति तो कमज़ोर हो रही है, शायद यह मेरा भ्रम है, मेरा प्रभु के अलावा है ही कौन? ख़ैर, दिनांक 02.08.2020 को बुखार आने के कारण मैंने स्वयं की तमाम जाँचें कराई, साथ–साथ कोरोना का टेस्ट भी कराया। आधे घंटे बाद जाँचकर्ताओं ने हमें निगेटिव करार दिया (मौखिक रूप से) तो मुझे पर्याप्त हर्ष हुआ। विचार आया कि चलो दवा लेकर ठीक हुआ जा सकता है।

मेरा पुत्र जो एक डॉक्टर है, वह अंतिम वर्ष की परीक्षा देकर घर आ रहा था, परिणामस्वरूप मुझे काफ़ी राहत थी। उसने कुछ दवाएं खरीदकर दी जिसके खाने के बाद भी बुखार उतरने का नाम नहीं ले रहा था। इसी बीच मेरे पंजीकृत फ़ोन पर कॉल आई कि आप पॉजिटिव हैं, कृपया बताएं कि आप अस्पताल में रहना चाहेंगे या घर पर। आत्मविश्वास के साथ मैंने एक टूक जवाब दिया कि मैं घर पर ही रहना चाहता हूँ।

परिवारजनों पर संशय के बादल मंडराने लगे थे और मुझे अपने से ज्यादा परिवार, पास–पड़ोस तथा सहकर्मियों की चिंता सताने लगी। अतः मैंने घर के आगे वाले कमरे जिसके पास लैट्रिन तथा हैंडपाइप तथा बोरिंग का कनेक्शन है, में रहने का निश्चय किया। मैंने सख़्त हिदायत दी थी कि मेरे अलावा इनका इस्तेमाल कोई नहीं करेगा। मकान कार्नर

का है तथा संरचना भी कुछ ऐसी है कि गली के रास्ते से सब आवागमन कर सकते हैं तथा अन्य लैट्रिन–बाथरूम भी उपलब्ध है। कुल मिलाकर अस्पताल से ज्यादा मैं घर में अपने को सुरक्षित महसूस कर रहा था।

मैंने अपने कमरे में स्वयं को कैद कर लिया था और समाज से स्वयं को अलग कर लिया था। तमाम नकारात्मक– सकारात्मक विचारों में झूलता रहता था किन्तु परिवारजनों से हमेशा अपने–आप को पॉजिटिव ही प्रदर्शित करता था ताकि उनमें निराशा घर न करे। मन बहलाने के लिये मात्र मोबाइल फ़ोन (स्मार्टफ़ोन) ही सहारा था।

कमरे में लेटे–लेटे मेरे कानों में आवाज़ सुनाई पड़ रही थी.....कुछ लोग चर्चा कर रहे थे। बड़ा सफ़ाई वाला बनता था... साला बड़ा हरामी रहा....मुहल्ले क कूड़ा फेकै पर बहुत कल्लात रहा...मर रहा है हरामी... अब फटी है, बड़कई घुस गई....हमका लगत है अब निकल जाई...वो मल्लुआ तो निपट गवा...हाँ हाँ कलय तो वोका निपटावा गवा....ऐसे तमाम मधुर वचन मेरे कानों में पड़ते रहे किन्तु मैं मौन रहा।

कहते हैं "जाको राखे सांइयाँ, मार सके ना कोय", मेरी भक्ति से शायद प्रभु प्रसन्न थे, सो सर्वथा मेरी रक्षा कर रहे थे और मैं अंजान...

ख़ैर धीरे–धीरे मैं स्वस्थ होने लगा। जब पर्याप्त सुधार से संतुष्ट हो गया तो मेरे पुत्र ने अपना कार्यभार ग्रहण करने के लिये घर से प्रस्थान किया, मैंने भी कहा था 'बेटा अब हम ठीक हैं, जाओ औरों को भी बचाना है' यहाँ तुम्हारी आर्थिक हानि भी हो रही है।

मैं अब कोरोना से मुक्त हो चुका हूँ और आइसोलेशन अवधि भी पूर्ण कर पुनः कार्यभार ग्रहण कर रहा हूँ। हाँ, एक बात जरूर बताना है कि परमेश्वर ने मुझे मनन, चिंतन करने का पूरा अवसर प्रदान किया। उनकी कृपा थी कि मैं पूर्णतः स्वस्थ हो सका। पुत्र ने निराशा भरे शब्दों में पहले कहा था– "What can I do, I am not absolute....We only Treat but he cures……I shall pray for your recovery….Take care and medicines regularly…Best of Luck Papa.

Please always be positive, as only negatives go to hell."

अब तक मेरी स्मरण–शक्ति वापस आ गयी थी, जो बताने लगी, वह घंटी मेरी धर्मपत्नी ही बजा रही थी जिसने मेरी कुशलता के लिये अनेक उपवास भी किये थे।

ठक, ठक, ठक

श्री राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखाधिकारी

पंसारी की दुकान पर बहुत भीड़ लगी हुई थी। दुकानदार मांग के अनुसार सभी ग्राहकों को सामान देकर वांछित पैसे प्राप्त कर रहा था। अचानक ठक–ठक की आवाज़ से हमारा ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ, पलटकर देखा कि एक बहुत ही गरीब आदमी, एक आदम कद से थोड़ी ज्यादा ऊँचाई के बांस को ज़मीन पर ठोक रहा था जिससे उसमें बने हुए छेद से पैसे निकल रहे थे। निश्चित रूप से वह बांस की ऊपरी छोर पर चीनी से बनी फाहे की मिठाई का विक्रेता था। इस मिठाई को छोटे–छोटे बच्चे

बड़े ही चाव से खाते है। पुनः दूसरी बार ठक – ठक की आवाज के साथ कुछ बचे हुए पैसे निकले । पर तीसरी बार ठोकने पर उसे निराशा हाथ लगी और परिणामस्वरूप कुछ भी नहीं निकला। शायद तीसरी बार वह कुछ और पैसे निकलने की उम्मीद लगा रखा था। इस बार उसके चेहरे पर मायूसी स्पष्ट रूप से झलक रही थी। उस व्यक्ति ने उन छोटे – बड़े सारे सिक्कों को गिनना शुरू किया । सारे पैसों के मूल्यांकन के पश्चात उसके चेहरे पर भययुक्त लाचारी के भाव दिखने लगे। शायद जो सामान वह खरीदना चाहता था, उसके अनुरूप पैसे उसके पास नहीं थे। मैं उसके चेहरे के चढ़ते – उतरते भाव को पढ़ने में मशगूल था कि दुकानदार ने उस व्यक्ति को आवाज लगाई कि भईया आपको क्या लेना है।

प्रतिउत्तर में हड़बड़ाकर उसने कहा कि भाई थोड़ा ठहर जाओ। अब दुकान पर मैं और मिठाई विक्रेता ही रह गये थे। ऐसी स्थिति में मैं उसकी सहायता करना चाहता था पर यह सोचकर रुक गया कि 'स्वाभिमान गरीबी या अमीरी को नहीं देखता है' यदि यह व्यक्ति स्वाभिमानी निकला तो मेरी सहायता के प्रस्ताव को ठुकरा दिया जाना तय था।

उसके चेहरे पर छायी उदासी ने मुझे इतना बेचैन कर दिया कि मैं उसके स्वाभिमान को ताक पर रखते हुए उस व्यक्ति से निवेदन किया कि भाई! क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ? प्रतिउत्तर में वह व्यक्ति एकदम शांत था जिससे मेरी बेचैनी और बढ़ गई। इसी दौरान उसने दुकानदार से 100 ग्राम तेल, एक पाव चीनी और आटा, दाल व चावल देने को कहा। मौका देखकर मैंने दुकानदार से प्रत्येक सामान की मात्रा बढ़ा देने का इशारा किया और वांछित कीमत अदा किया और उससे हाथ जोड़ लिया। इस बार उसने पैसे देने का विरोध तो नहीं किया पर एक गहरी नज़र हमारे ऊपर डालकर अपने गंतव्य की ओर तेज़ी से बढ़ गया।

अब मैं अपराध बोध से मुक्त था और ऐसा महसूस कर रहा था कि जैसे मेरे अंदर ईश्वरीय तत्वों का प्रवेश हो रहा हो, मन एकदम शांत था। फिर मैंने सोचा कि थोड़ी–सी सहायता करने के बदले इतनी बड़ी शक्ति का प्राप्त होना, जो मन व आत्मा को भरपूर सुकून प्रदान करे तो सौदा बहुत बड़े मुनाफे का था। मैंने ईश्वर को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया और अपने घर की ओर चल दिया।

सच है कि यदि ईश्वर ने हमें इतना सक्षम बनाया है तो हमारा कर्तव्य बनता है कि हमें गरीब व लाचार व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए जो अपने अथक परिश्रम के बाद भी दिन–प्रतिदिन के अपनी जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति तक नहीं कर पाते हैं। वैसे हम किसी की पूरी ज़िंदगी तो शायद नहीं बदल सकते पर उसके एक दिन को तो खुशियों में बदल ही सकते हैं । ईश्वर ऐसे मौके पर अपना संदेश हमें हमेशा देता रहता है बस हमें उस संकेत को पहचानने की आवश्यकता है ।

साध्वी

सुश्री पुष्पा मिश्रा
सहायक लेखाधिकारी

आज सुबह से ही माँ खुश नज़र आ रही थी। उनके खुश रहने के ज्यादा कारण नहीं थे, सिर्फ छोटी–छोटी बातों से खुश हो जाती थी। अचरज भी होता था और खीज भी कि कोई इतनी सी बात पर खुश कैसे हो सकता है। जैसे, आज ही की बात करें तो आस्था चैनल पर 11.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक भागवत का प्रसारण है तो दिनभर व्यस्त रहना है। जल्दी से खाना बन भी जाएगा, खा–पीकर फुरसत से ड्राइंग रूम के सोफे पर सत्संग चलेगा और उस पर यह कि कथावाचक साध्वी हैं और मात्र 18 वर्ष की आयु से प्रवचन शुरू कर दिया है। बहुत मधुर वाणी में भजन के साथ कथावाचन करती है।

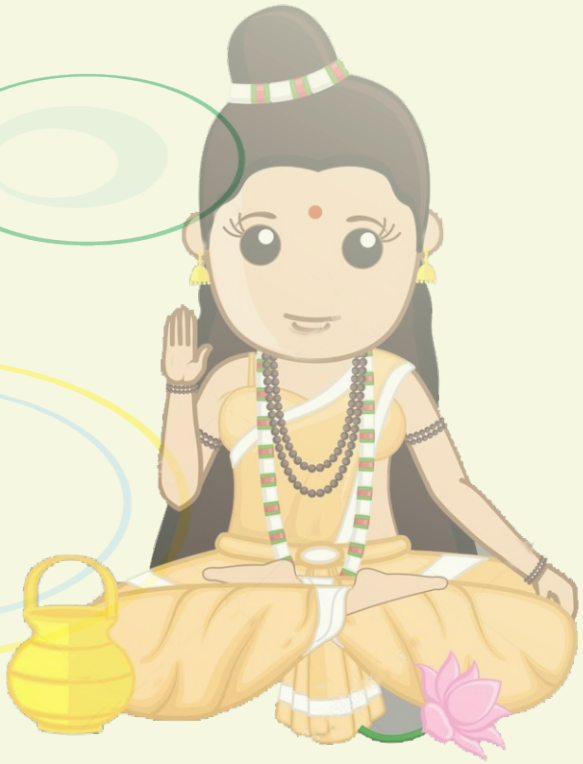

कई बार तारीफ़ सुन–सुनकर मुझसे रहा नहीं गया 'माँ आप भी न! आपको मालूम तो कुछ है नहीं, सब व्यवसायीकरण है। सुंदर चेहरे वाली छोटी उम्र की कन्याओं को टीका लगाकर मंच पर आसीन कर देते हैं। आप देखती हो न, सब कितना बन–ठनकर मंच पर बैठती हैं। ऐसे कोई भक्ति होती है।

माँ क्रोधित हो गईं, "यदि सत्संगी लोगों को अच्छा नहीं कह सकती हो तो अपशब्द भी मत कहो, ये कौन सी शिक्षा पायी है तुमने जो इतना कठोर बोलती हो। तुमको मालूम है न जिस उम्र में तरुणियाँ साज–सिंगार और दर्पण में समय बिताती हैं, ये उस उम्र में आध्यात्म की राह चल पड़ी।"

"नहीं माँ! मैं कुछ भी गलत नहीं कह रही, आप भोली हो, समाज में बहुत कुछ ऐसा होता है जो

दिखता नही"। माँ का चेहरा तमतमा–सा उठा, आस्था पर कुतर्क या तर्क कुछ भी जायज़ नहीं होता है।

"मेरी प्यारी माँ, आपने कभी अपनी तरफ़ देखा? आप 16 वर्ष की थी तो विवाह कर दिया गया, आपके सपने नहीं थे क्या? विवाह के 4 वर्ष बाद पति ने त्याग दिया, फिर भी आप उसकी संतान को कोख में लिये घर छोड़ आयीं और सिंदूर की लाली को उस व्यक्ति के लिये सजाये रही जिसने आपको कभी समझा ही नहीं, 20 वर्ष की उम्र में मातृत्व और ढेरों सामाजिक दंश झेलती रहीं लेकिन कभी अपनी इच्छाओं को महत्व नहीं दिया। माँ सधवा होकर भी वैरागिन रहीं आप"।

माँ मेरी साध्वी तो आप ही हो, सिर्फ अध्यात्म और भक्ति की ही राह तो साधक नहीं बनाती है, जो तप आपने किया उसके सामने तो बड़े–बड़े साधक नतमस्तक हैं।

माँ का वर्षों का बांध टूट चला था, फिर तो देर तक दोनों माँ–बेटी लिपटकर देर तक स्मृतियों का दंश कुरेदती रहीं।

शिक्षा में सुधार :
सभी बच्चों का अधिकार

सुश्री आकृति कुशवाहा
पुत्री- श्री अनूप कुमार
वरि. लेखाकार

'शिक्षा में सुधार होगा,
दूर तभी अज्ञानता का अंधकार होगा'

'शिक्षा' शब्द सुनकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह बहुत छोटा–सा विषय है, मगर कुछ देर सोचने पर पता चलता है कि यह बहुत बड़ा विषय है जिसपर चर्चा करना बहुत जरूरी है। मगर हमारे देश भारत में इसे हल्के में लिया जाता है क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है जिसकी वजह से कुछ साल पहले लड़कों को बड़ा होते ही कृषि कार्य या घर के व्यापार में डाल दिया जाता था और लड़कियों से यह उम्मीद रखी जाती थी कि वे गृह कार्य अच्छे से सीख ले ताकि अच्छे घर में शादी हो जाए।

हमारी पीढ़ी के लोग बहुत खुशनसीब है जो ज़माने के साथ चल रहे हैं, जहाँ लड़कों और लड़कियों को एक समान माना जाता है, चाहे वह पढ़ाई की बात हो या खेल–कूद की या किसी चीज की लेकिन यह सब सिर्फ उन्हीं पर लागू होता है जो मिडिल क्लास या हाई क्लास परिवार से हों, नहीं तो लो क्लास वालों के साथ अभी भी पढ़ाई की समस्या है कुछ उनकी हालातों की वजह से। आज हालांकि एक रिक्शेवाले का बेटा भी आई. ए. एस. अधिकारी बनता है पर यह अपवाद के रूप में देखा जाता है। ज़्यादातर लोग तो अपने हालातों से लड़ने और मरने में ही रह जाते हैं।

कहीं न कहीं इसकी जिम्मेदारी सरकार की है। सरकारी स्कूलों में भी इन्फ्रास्ट्रक्चर अद्यतन करने और शिक्षकों को तद्नुसार प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। गांवों के स्कूलों में पढ़ाई का उच्च स्तर

अद्यतन न होने के कारण वह कुछ पीछे रह जाते हैं जो कि हमारे देश के लिए एक गंभीर समस्या है।

सरकार ने कुछ नीतियाँ निकाली है जैसे मिड डे मील। इस नीति के अनुसार सरकार ने स्कूली बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया है जो कि एक उत्तम नीति है। राइट टू एज्यूकेशन के अंतर्गत सरकार की तरफ़ से गरीब बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में दाखिला दिया रहा है।

वर्तमान में बच्चों को मानसिक या शारीरिक दंड देना भी अपराध की श्रेणी में रखा गया है। आज यह कहावत बिल्कुल प्रासंगिक नहीं प्रतीत होती कि–

'स्कूल ऐसी जगह है, जहाँ हमें कूटा जाता है और माँ–बाप को लूटा जाता है।'

अच्छे स्कूल शहरों की भीड़–भाड़ से दूर बनाए जा रहे हैं खुली जगहों पर, शांत वातावरण में। यह एक तरह से ठीक भी है लेकिन अगर हम जैसे बच्चे दाखिला लेंगे तो बस का खर्च अलग से देना पड़ता है। यह एक मायने में सही भी है। क्योंकि लेंगे नहीं तो देंगे क्या? पढ़ाई वहाँ पर अच्छी होती है, लेकिन थोड़ी महंगी होती है। कुछ प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाई का स्तर और भी उच्च कोटि का हो सकता है यदि उस स्कूल की प्रशासन व्यवस्था सुदृढ़ हो।

हम यही आशा करते हैं कि शिक्षा नीति बेहतर ढंग से एवं व्यापक रूप से लागू हो।

लेखा संगम

पद्य संगम

आज सुबह का गीत

श्री यश मालवीय
पर्यवेक्षक

गीत हमारी चुगली करते हैं
इक दरपन सा सम्मुख धरते हैं
गीत हमारी चुगली करते हैं।

सबसे छुपना सहज,
गीत से छुपना नामुमकिन
इनमें सजे हुए हैं,
मेरे अनबीते से दिन
चुप होठों पर वंशी धरते हैं।

इनमें सुख–दुख के बादल हैं,
बूँदाबाँदी है
कितने रंग सँजोए सी,
बालों की चाँदी है
कभी न तूफानों से डरते हैं।

ओस लिखे हैं,
फूलों की पँखुरी पर खिले हुए
सुबह–सुबह किरनों की,
कोमल उँगली इन्हें छुए
तिथियों से तिथियों को हरते हैं।

बंद पड़े खिड़की–दरवाजे
खोला करते हैं
हर परदे में घुँघरू जैसे
बोला करते हैं।
आँखों में तैरते–उभरते हैं।

दुनिया–देश, समाज–प्यार,
सब बाँचा करते हैं
निपट अकेले, तन्मय होकर,
नाचा करते हैं
इनकी छत, आकाश उतरते हैं।

कोरोना के कहर से काँप रहा संसार

श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल
सहायक पर्यवेक्षक

कोरोना के क़हर से काँप रहा संसार।
प्यारे भगवद्भजन से होगा बेड़ा पार।।

मोबाइल, कम्प्यूटर को तू मान रहा है शान।
मंगल ग्रह पर यान भेजकर करता है अभिमान।।

चींटी, मच्छर जैसा तुझको मार रहा दिन–रात।
एक कोरोना बता रहा है यह तेरी औक़ात।।

ख़ुदा की लाठी है ये पगले उसका है ये वार।
कोरोना के क़हर से काँप रहा संसार।।

जब–जब पाप बढ़ा दुनिया में बढ़ता अत्याचार।
महाकाल धरती पर आकर करता है संहार।।

पाप–पुण्य सब भूल गया है भूल गया जज़्बात।
धन संग्रह में लगी हुई है सारी आदम जात ।।

धन की ढेरी बचा न पायी तेरा घर परिवार।
कोरोना के क़हर से काँप रहा संसार।।

महल, दुमहला, सोना–चाँदी पन्ना और पुखराज।
टी.वी., फ्रिज़, ए.सी. और कूलर सब है माटी आज।।

खस चंदन से नहा रहा है अपने को महकाया।
इक दिन पन्नी में लिपटेगी मान ले तेरी काया।।

पर–पीड़ा की राह छोड़कर कर ले पर–उपकार।
कोरोना के क़हर से काँप रहा संसार।।

साँप, छिपकली, चूहा, मेढ़क, चमगादड़ तक खाया।
दानव बनकर तू धरती पर पापाचार मचाया।।

कोरोना से क्यों रोता है, है कुदरत नाराज।
नये सिरे से कर ले बन्दे जीवन का आगाज।।

कोरोना के क़हर से काँप रहा संसार।
प्यारे भगवद्भजन से होगा बेड़ा पार।।

अंतिम पथ

श्री चंचल कुमार तिवारी
डी. ई. ओ.

विमान निकल पड़ा था, अपने गंतव्य को,
सब अग्रसर थे, नभ पथ पर लक्ष्य को,
14 वीरों की टोली से सजी,
विमान क्या पता बढ़ जायेगा, अंतिम पथ को
आज अधूरा कुछ रह जायेगा,
जग सदा के लिए छूट जायेगा,
कीर्ति, यश, पराक्रम, शेष रह जायेगा,
शत्रु अवसर पा मिथ्या इठलायेगा।
होनी अटल, अंजान से,
वीर गतिमान थे, आकाश में,
विघ्न बाधा का न तनिक आभास था,
मन में केवल तिरंगे का एहसास था।
है जो अति प्रबल, न टाला जायेगा,
जो लिखा विधाता ने ,
साक्षी है इतिहास, अवश्य घटित हो जायेगा,
देश–प्रेम जिसके रग– रग में बसा हो,
शुभ–अशुभ से वो क्या घबरायेगा,
जिस भूमि से जन्मे नाना रत्न,
जिसकी रक्षा में सब तैयार,
वो भला क्या चिंगारी से घबरायेगा,
हँसते– हँसते बलिवेदी पर चढ़ जायेगा।

लिए प्रेरणा गौरवशाली अतीत की,
अचिंतित सब बैठ बना रहे थे, योजनाएं,
बेहतर, सशक्त कल की।
सेना की सफलताओं पर,
विपिन जी को नाज़ था,
चौड़ी छाती, कद विशाल,
कुशाग्र बुद्धि, शरीर वज्र समान,
अदम्य रण कौशल दिखा,
शत्रुओं को धूल चटाया,

जो रखता युद्ध कौशल का गूढ़ ज्ञान,
पाकर ऐसे द्रोणाचार्य समीप,
सब अभिक हो, बैठ पा रहे थे,
रण कौशल का पुनीत मर्म ज्ञान ।
बहु जन्मों का होता जब पुण्योदय,
माँ भारती के रक्षक चुन सेना में लाए जाते,
भाग्यशाली हो जो अति, वीरगति को पाते,
मिट्टी में मिल, माँ भारती के हृदय में स्थान पाते,
हँसते– हँसते वीर हैं जाते,
पीछे अपनी अमर वीरगाथा छोड़ जाते ।
मोह–माया का सब त्याग करो,
निज वर्दी पर अभिमान करो,
आज नहीं तो कल जग छूट जायेगा,
जग सदा याद करे, वीरों ऐसा काम करो,
इतना सुन सब अपने भाग्य पर इठलाये,
नमन कर तिरंगा को सीने से लगाए,
कालक्रम में प्रकृति ने ऐसी माया रचायी,
उमड़ी बिजली, पथ में धुंध छायी ।

था नियति का लेख विमान लाचार हुआ,
फिर भी कैप्टन ने बहुत कौशल दिखाया,
ज्वाला की लपटों में भी अपना धैर्य दिखाया,
जब लपटे उठी विमान से,
सबके हाथ उठे एकाएक आकाश में,
हे प्रभु ! यह अनहोनी टल जाय,
सपूतों की टोली बच जाय,
ऐसा जब सभी सोच रहे थे,
वीर आशा से तिरंगा देख रहे थे,
तनिक भी न भय था,
राष्ट्र रक्षक होने पर तत्क्षण भी गर्व था,
भले निज सपने छूट रहे थे,
न शोक था, न असंतोष था,
सब हर्षित थे,
देख आभा आने वाले वैभवशाली कल की,
जब ज्वाला ने अपना विकराल रूप दिखाया,
वीरों ने भारत माँ के नारे से प्रतिकार दिखाया ।
सब किये ऐसा जयघोष की नभ थर्राया,
कौंधी बिजली एक बिम्ब बन आया,
देख आकृति, माँ भारती को हाथ तिरंगा लिए,
जैसे दावानल पर सहसा, मेघ जल वर्षाया।
हर्षित हो सब भूले,
असह्य ताप ज्वाला की,
माँ भारती ने द्रवित हो सब को गले लगाया,
दुलारकर अपने आँचल में छुपाया,
नश्वर तन सब छोड़ चले पड़े थे,
लक्षित अंतिम पथ, गंतव्य अमरत्व को,

हाल देश में ऐसा मानो,
जैसे बिजली गिरी हो हर घर पर,
फूट–फूटकर देश रोया था,
श्रद्धांजलि देते 14 वीर सपूतों को,
नमन है हे वीर!, तुम्हें,
उऋण देश न हो पायेगा,
जो किया त्याग, बलिदान,
वह व्यर्थ न यूँ हीजायेगा।
हे शत्रु देशों ! झूठे न इठलाओ
अपनी–अपनी खैर मनाओ,
बजेगी ऐसी रणभेरी भयंकर,
स्वयं काल विकराल रूप दिखायेगा,
न बचेगा शेष कुछ, तुम्हारा अस्तित्व ही मिट जायेगा,
हे हरि! मुझे पुण्य अवसर देना,
दुश्मनों को रण में मार भगाऊँ,
जब अंत समय आये मेरा,
रण में लड़ते वीरगति पाऊँ,
आँचल तले माँ भारती की गोद में
सोते, अपने भाग्य–कर्म पर इठलाऊँ ।।

माँ का घर

सुश्री ममता श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखाकार

बरसों बीत गए,
उस घर से विदा हुए।
बरसों बीत गए,
नई दुनियां बसाए हुए ।।

**

फिर भी याद आते हैं वो पल,
जो हमने थे वहाँ बिताए हुए।
रम गई हूँ इस नई ज़िंदगी में,
घर, परिवार और बच्चों की खुशी में ।।

**

फिर भी जब भी आता है,
नाम माँ के घर का,
खो जाती हूँ, उस घर की कहानी में।
कुछ पुरानी बातें, कुछ पुरानी यादें,
ज़िंदा है आज भी,
वो कहीं, कुछ रिश्ते–नाते ।।

**

फुरसत में ही सही,
कुछ पल के लिए ही सही,
चाहती हूँ जीना, फिर से वही ज़िंदगी,
ये मेरी तमन्ना ही सही ।।

कितना भी बसा लो अपना घर,
पर याद ही आता है माँ का घर।
खुद बनकर भी माँ,
याद आती है सिर्फ अपनी माँ।

कविताएँ

श्री नीरज भाटिया
सहायक लेखाधिकारी

मेरी मातृभाषा – मेरा गौरव

मातृभाषा यानी अंतस की भाषा,
दु:ख में करुणा भरी,
विपत्तियों में साहस भरी,
माँ की ममता लिये,
पिता की गंभीरता समझाती,
कभी बदलाव की ऊँची लहर बनती,
तो कभी घनघोर अंधेरे से उबारने को,
गीता–कुरान बनती,
सत्य वचनों को समेटती और बाँटती,
पथ–प्रदर्शक बनती,
संत–वाणी बन सम्पूर्ण बनती,
उद्धारमयी बनती, रोशनी बनती....

बचपन का निश्छल तराना

वो बेवजह मुस्कुराना,
घास तले खिलौना छिपाना,
लिपटकर हँसना, और
सखा संग खुद भी गिर जाना,
वो घर से स्कूल की दौड़ें,
वो चिढ़ाना– फिर मनाना,
मुश्किल है अपना बचपन भुलाना,
बीत गया वो जीवन का निश्छल तराना....

ढाई आखर का हाहाकार

सुश्री पापिया हालदार
सहायक पर्यवेक्षक

फ़ोन में....
व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टा
और अनगिनत ऐप
प्यार में....
टी०वी०, फ्रिज़, हाउसहोल्ड
और जेनरेशन गैप

टी० वी० में....
नृत्य, संगीत सिनेमा
मनोरंजक चैनल
राजनीति में.....
विकास, विपक्ष, चुनाव
बहसबाजी के खेल
पड़ोस में....
आतंक, युद्ध विभीषिका
गरीबी और अज्ञान

अन्तरिक्ष में.....
मिशन मंगल–उड़ान
प्रक्षेपण, चंद्रयान
यानि...
भाषा के विकास ने
किया हर क्षेत्र को
शब्दों से भरमार
बस ....
दिलों में झाँको तो
ढाई आखर का हाहाकार ।।

मौन

श्री शिवम कुमार
एम. टी. एस.

मौन ने मौन से फिर कहा है
मौन तू ही बड़ा है यहाँ पर
मौन से साधना भी सधी है
मौन से आत्मा भी प्रभु से जुड़ी है यहाँ पर ।1।

***

मौन से ही तो सिंहासन है इंद्र का डोला
मौन से ही तो है ऋषियों का बोल–बाला
मौन से ही छटी हैं घटाएँ,
मौन से तो बारिश की बूँदे आये ।2।

***

मौन से ही तो आते हैं मोहन
मौन से तो राधा बुलाए
मौन जीवन में उतरता है बहुत गहरा
मौन का ही है मन के कोने–कोने पे पहरा ।3।

***

मौन से मनुष्य को तेज मिलता है
मौन से होती है शांति प्रस्फुटित
मौन से सकारात्मक ऊर्जा है मिलती
मौन से ज़िंदगी भी सही राह पर है चलती ।4।

***

मौन करके तो देखो कुछ क्षणों के लिए
जीने की राह आसान हो जाएगी ज़िंदगी भर के लिए
मौन में वह शक्ति है
जिससे बड़े–बड़े विद्वान भी परास्त हो सकते है ।5।

***

कान्हा! फिर से आना होगा

श्री अंकित निगम
सहायक लेखाधिकारी

कान्हा ! फिर से आना होगा,
फिर लीला दिखलाना होगा,
पथ–भ्रष्ट हुई मानवता को,
फिर से पथ पर लाना होगा ।।
कान्हा, फिर से . . . .

फिर कंस बहुत विकराल हुए,
वाचाल कई शिशुपाल हुए,
फिर जरासंध से हठधर्मी
फिर इन्द्र के जैसे अपकर्मी।
इन नराधमों को, इनकी ही, भाषा में समझाना होगा ।।
कान्हा ! फिर से . . . .

फिर उठा कालिया का फन है,
फिर विपदा में वृन्दावन है,
फिर कुपित देव की दृष्टि है,
फिर आपाती जल–वृष्टि है।
गोकुल के प्राण बचाने को,
यमुना विषहीन बनाने को,
गोवर्धन पुनः उठाने को, फिर गिरधर बन जाना होगा।।
कान्हा ! फिर से . . . .

फिर छल की सभा उपस्थित है,
फिर चौसर वही व्यवस्थित है,
फिर कौरव से व्यभिचारी हैं,
फिर द्रुपद सुता बेचारी है ।
उसका विद्वेष मिटाने को,
दम्भी का दम्भ भुलाने को,
छल को भी छल दिखलाने को, फिर कुरुक्षेत्र जाना होगा ।।
कान्हा ! फिर से . . . .

फिर धर्मराज द्युत लोक में हैं,
फिर भीम सभी बस शोक में हैं,
फिर धनुष पार्थ ने त्यागे हैं,
फिर माद्रेय खड़े अभागे हैं ।
इनका अज्ञान घटाने को,
निष्काम कर्म सिखलाने को,
और 'अंकित' धर्म कराने को, फिर गीता दोहराना होगा ।।
कान्हा ! फिर से आना होगा . . . .

देवकी और यशोदा

सुश्री प्रीति श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखाकार

एक ने जन्म देने की पीड़ा सही ।
एक वात्सल्य रस में डूबी रही ।।
एक कष्ट की सलाखों के बीच ।
एक ललना के साथ, फूलों के बीच ।।
एक बहाती रही, पुत्र विरह का नीर ।
एक स्नान हेतु जाए, जमुना तीर ।।

एक पुत्र को स्वप्न में रही खोजती ।
एक पुत्र–मुख में ब्रह्मांड को रही देखती ।।
एक हाथ से छप्पन भोग खिलाने के लिए तरसती ।
एक खिलाते – खिलाते पूरी ही खिला दे माखन मटकी ।।
एक ख़्वाबों में सजाती रही अपने ललना को ।
एक बालों में मोर–पंख लगाती रही कृष्णा को ।।

एक वस्त्र पहनाने के लिए रही परेशान ।
एक पीतांबर पहनाकर दे, कान्हा को मान ।।
एक लोरी सुनाते – सुनाते, सो जाए काँटों की सेज पर ।
एक सो जाए लल्ला को सीने से लगाकर ।।
नहीं किसी का वात्सल्य कम है ।
दोनों का पुत्र– प्रेम सम है ।।

धन्य है पावन सुरसरिता

श्री अनुराग निषाद
पुत्र- श्री अनिल कुमार
लेखाकार

गंगा नदी वरदान समान,
यह पानी अमृत समान,
गंगा नदी हमारी माँ समान,
यह नदी भारतीयों की शान ।।

पावन करती धरती यह,
भारत में बहती यह,
प्रयाग में संगम स्थित,
माँ गंगा का आशीर्वाद स्थित ।।

पापों को धोती यह,
पुण्य प्रदान करती यह,
गंगा किनारे कुंभ मेला लगता,
पुराणों में इसका वर्णन मिलता ।।

पवित्र है यह सरिता,
भारतीय संस्कृति यह दर्शाता
परमेश्वर कैलाशपति की जटा में समाई है,
धन्य है भागीरथ, सुरसरिता धारा धरा पर बहाई है ।।

साइकिल

श्री रवींद्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

पहले ज़माने में साइकिल उपयोगी थी
बच्चे तो बच्चे बूढ़ों को भी ढोती थी।

नौजवानों से उसकी खूब दोस्ती थी
करतब करने से वो रोकती थी।

बहुआयामी प्रतिभा की साइकिल धनी थी
अच्छे–अच्छों के घर पर सजकर खड़ी थी।

देश की अर्थव्यवस्था से अकेले लड़ी थी
सबके घर पर साइकिल खड़ी थी।

न मंहगाई की मार, न डॉक्टर की पुकार
सबको साथ लेकर साइकिल चली थी।

बोझ चाहे जितना हो ऊपर
फिर भी मुस्कराकर साइकिल खड़ी थी।

कोई शिकायत का मौका नहीं
वह सबके साथ अकेली खड़ी थी।

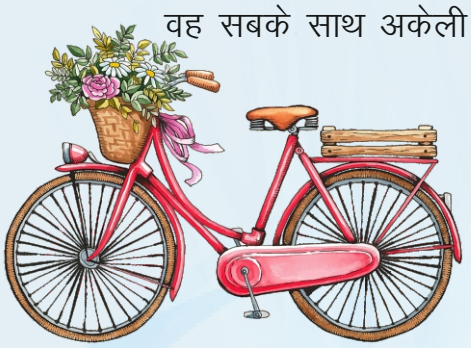

जेब में फूटी कौड़ी नहीं
फिर भी वो यात्रा कराने पर अड़ी थी।

जाड़ा हो या गर्मी, धूप हो या छाँव
वो हमेशा साथ लेकर चली थी।

कंकडों–पत्थरों से वो अकेली लड़ी थी
फिर भी हम सबको साथ लेकर चली थी।

साइकिल हमारी, साइकिल तुम्हारी
वो किसी मज़हब की नहीं थी।

ऑफिस हो या बाजार वो अकेले खड़ी थी।
साइकिल हम सबको साथ लेकर चली थी।

Accumulation	संचय; संचयन
Accuracy	यथार्थता; परिशुद्धता
Accusation	दोषारोपण; अभियोग (विधि)
Accused	अभियुक्त
Achieve	प्राप्त करना; उपलब्ध करना
Acknowledge	प्राप्ति स्वीकार करना; पावती देना; प्राप्ति सूचना
Acquaintance	परिचय; परिचित (व्यक्ति)
Acquire	अर्जन करना
Acquit	दोषमुक्त करना
Acquittance roll	भुगतान पंजी
Act	कार्य; कृत्य; अधिनियम
Acting	कार्यकारी
Action	कार्रवाई; क्रिया
Action Plan	कार्य योजना
Active	सक्रिय; क्रियाशील
Act of Misconduct	कदाचार
Acctual	वास्तविक
Acctuary	बीमाकंक
Adaptable	अनुकूलनीय; रूपांतरणीय
Add	जोड़ना
Addendum	अनुशेष
Address	पता; अभिभाषण; संबोधन; मानपत्र
Addressee	प्रेषिती
Address of welcome	अभिनंदन पत्र
Adduce	पेश करना
Adequacy	पर्याप्तता
Adherence	अनुवर्तन
Adhesive	आसंजक

रचनाकारों का परिचय

क्र. सं.	रचनाकारों का नाम (सर्वश्री)	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	कार्यालय
01	यश मालवीय	पर्यवेक्षक	सी/1745	लेखा–प्रथम
02	लोकेश चंद्र लाल	कनि. हिंदी अनुवादक	जे/5009	लेखा–प्रथम
03	शशांक त्रिवेदी	लेखाकार	ई/3769	लेखा–प्रथम
04	रमेश चन्द्र	सहा. लेखाधिकारी	बी/1916	लेखा–प्रथम
05	सतीश राय	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2551	लेखा–द्वितीय
06	विकास जायसवाल	सहा. लेखाधिकारी	बी/2069	लेखा–द्वितीय
07	राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव	सहा. लेखाधिकारी	बी/1877	लेखा–द्वितीय
08	पुष्पा मिश्रा	सहा. लेखाधिकारी	बी/2527	लेखा–द्वितीय
09	आकृति कुशवाहा	पुत्री– श्री अनूप कुमार/व.ले.	डी/3585	लेखा–प्रथम
10	यश मालवीय	पर्यवेक्षक	सी/1745	लेखा–प्रथम
11	राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	सहायक पर्यवेक्षक	--	सेवानिवृत्त
12	चंचल कुमार तिवारी	डी. ई. ओ.	के/5583	लेखा–प्रथम
13	ममता श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2627	लेखा–प्रथम
14	नीरज भाटिया	सहा. लेखाधिकारी	बी/1585	लेखा–द्वितीय
15	पापिया हालदार	सहायक पर्यवेक्षक	एम/2384	लेखा–द्वितीय
16	शिवम कुमार	एम. टी. एस.	जी/3793	लेखा–प्रथम
17	अंकित निगम	सहा. लेखाधिकारी	बी/7025	लेखा–प्रथम
18	प्रीति श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2947	लेखा–प्रथम
19	अनुराग निषाद	पुत्र– श्री अनिल कुमार/ले.	ई/3716	लेखा–प्रथम
20	रवींद्र कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2856	लेखा–प्रथम

हिन्दी पखवाड़ा - 2021

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
एवं

लेखा संगम

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth In Public Interest